कुमार जीवन - 12

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ आज भट्ठी का आरम्भ करने के लिए बुलाया है। इस भट्ठी में सर्व गुणों की धारणा मूर्त्त बनने के लिए वा सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त बनने के लिए आये हो। इसके लिए मुख्य तीन बातें ध्यान में रखनी है। वह कौन-सी? जिन तीन बातों से सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त और सर्व गुणमूर्त्त बनकर ही जाओ। सारी नालेज का सार उन तीन शब्दों में समाया हुआ है। वह कौन से शब्द हैं? **एक त्याग, दूसरा तपस्या और तीसरा है सेवा। इन तीनों शब्दों की धारणामूर्त्त बनना अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञानमूर्त्त और सर्व गुणों की मूर्त्त बनना।**

➳ _ ➳ त्याग किसको कहा जाता है? निरन्तर त्यागवृत्ति और तपस्यामूर्त्त बनकर हर सेकेण्ड हर संकल्प द्वारा हर आत्मा की सेवा करना है। यह सीखने के लिए भट्ठी में आये हो। वैसे तो त्याग और तपस्या दोनों को जानते हो फिर अभी क्या करने आये हो?(कर्मो में लाने के लिए) **भल जानते हो लेकिन अभी जो जानना है, उस प्रमाण चलना, दोनों को समान बनाने के लिए आये हो।** अभी जानने और चलने में अन्तर है। उस अन्तर को समाप्त करने के लिए भट्ठी में आये हो।

➳ _ ➳ ऐसे तपस्वीमूर्त्त वा त्यागमूर्त्त बनना है जो आप के त्याग और तपस्या की शक्ति के आकर्षण दूर से प्रत्यक्ष दिखाई दें। जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती है वा अनुभव होती है। वैसे आप की तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे। तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे। **सिर्फ सेवाधारी बनकर सेवा करने से जो सफ़लता चाहते हो, वह नहीं हो पाती है। लेकिन सेवाधारी बनने के साथ-साथ त्याग और तपस्यामूर्त्त भी हो तब सेवा का प्रत्यक्ष फल दिखाई देगा।** तो सेवाधारी तो बहुत अच्छे हो लेकिन सेवा करते समय त्याग और तपस्या को भूल नहीं जाना है। तीनों का साथ होने से मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होती है। समय कम सफलता अधिक। तो इन तीनों को साथ जोड़ना है। यह अच्छी तरह से अभ्यास करके जाना है। **(19.04.1971)**

➢➢ किन किन बातों का त्याग करना है ?

➳ _ ➳ पुराने संस्कारों का त्याग

➳ _ ➳ इच्छाओं का त्याग

➳ _ ➳ मैं पैन का त्याग

➳ _ ➳ नाम मान शान का त्याग

➳ _ ➳ देह भान का त्याग

➳ _ ➳ विकारों का त्याग

➳ _ ➳ देह के सर्व समबंधो का त्याग

➳ _ ➳ आसक्तियों का त्याग

➳ _ ➳ कुसंग का त्याग

➳ _ ➳ व्यर्थ संकल्पों का त्याग

➳ _ ➳ कमजोरी देखने का त्याग